जन्म देने वाली माता को श्रेष्ठ और पुत्री को जन्म देने वाली माता को हीन समझा जाता है। यदि परिवार में बुजुर्ग महिलाएँ पुत्रवती हैं, तो वह पुत्री को जन्म देने वाली माताओं को उपेक्षित करती हैं।

वर्तमान समय में भी समाज में फैले अशिक्षा के कारण समाज का एक बड़ा वर्ग पुत्री जन्म के लिए स्त्रियों को ही दोषी ठहराता है, अतः घर की बड़ी महिलाओं द्वारा उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। अतः हम इससे पूर्णतः सहमत है कि समाज के इस स्वरूप के लिए स्त्रियाँ ही अधिक दोषी हैं।

3- भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उ- भारतीय समाज पुरुष-प्रधान है जिसमें पुरुषों को तो हर प्रकार की स्वतंत्रता प्राप्त है किंतु स्त्री को नहीं। विवाह के संदर्भ में पुरुष को अपना जीवन-साथी चुनने का पूरा अधिकार है किंतु स्त्री को तमाम सामाजिक मर्यादाओं के प्रति नतमस्तक होना पड़ता है। पुरुष की आकांक्षा की पूर्ति की जाती है किंतु स्त्री को पारिवारिक और सामाजिक फैसलों से समझौता करना पड़ता है।

प्रस्तुत पाठ में भी भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा उसकी इच्छा के विरुद्ध जबरन पति थोपा जाना मात्र एक दुर्घटना नहीं अपितु विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार को कुचलने की सदियों से चली आ रही परंपरा का प्रतीक है, जहाँ युवती की इच्छाओं और अधिकारों को अनदेखा कर पुरुष प्रधान पंचायत एकपक्षीय निर्णय के द्वारा युवती पर पति थोप देती है।